श्रीमहालक्ष्म्यष्टकम् स्तोत्रम्

श्रीगुरुदेव को नमस्कार।
श्रीशुभ, श्रीलाभ। श्रीगणेशाय नमः।
श्रीमहालक्ष्म्यष्टकम् स्तोत्रम्

श्लोक १

सौभाग्य की आधार, देवताओं द्वारा पूजित महामाया,
जिन्होंने हाथों में शंख, चक्र, गदा धारण कर रखे हैं,
उन महालक्ष्मी जी को नमस्कार है।

श्लोक २

कोलासुर दैत्य को भय देने वाली,
गरुड़ पर विराजमान,
सारे पापों का नाश करने वाली महालक्ष्मी जी को नमस्कार है।

श्लोक ३

जो सब कुछ जानने वाली हैं, जो सबको वरदान देने वाली हैं,
जो सब दुष्टों के लिए भयदायक हैं और जो सम्पूर्ण दुखों का नाश करने वाली हैं,
उन महालक्ष्मी जी को नमस्कार है।

श्लोक ४

जो देवी सर्वदा सिद्धि, बुद्धि, सांसारिक भोग तथा
मोक्ष दोनों को देने वाली हैं, उन साक्षात् मन्त्रस्वरूपिणी
महालक्ष्मी जी को नमस्कार है।

श्लोक ५

जिन महादेवी का न आदि है, न अन्त है, जो विश्व की आदिशक्ति हैं
तथा जो केवल योगज्ञान के द्वारा जानी जा सकती हैं
व योगज्ञान के द्वारा ही प्रकट होती हैं, उन महालक्ष्मी जी को नमस्कार है।

श्लोक ६

जो स्थूल हैं, फिर भी सूक्ष्म हैं तथा महाभीषण भी हैं,
जो सबको अपने अन्दर धारण करने वाली महान शक्तिस्वरूपिणी हैं
तथा महान पातकों को नष्ट करने वाली हैं, उन महालक्ष्मी जी को नमस्कार है।

श्लोक ७

जो कमल के आसन पर विराजित हैं, साक्षात् परमात्मा का स्वरूप हैं,
परमशक्तिमती हैं तथा जो सम्पूर्ण विश्व की माता हैं,
उन महालक्ष्मी जी को नमस्कार है।

श्लोक ८

जो श्वेत वस्त्रों को धारण करती हैं, अनेक प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित हैं,
जो विश्व को धारण करने वाली हैं तथा जो सम्पूर्ण विश्व की माता हैं,
उन महालक्ष्मी जी को नमस्कार है।

श्लोक ९

जो व्यक्ति इस महालक्ष्मी अष्टक नामक स्तोत्र का भक्तिसहित पाठ करता है,
उसे सर्वदा सम्पूर्ण सिद्धियों की तथा राज्य की प्राप्ति होती है।

श्लोक १०

जो व्यक्ति इस स्तोत्र का नित्य एक समय पाठ करता है,
उसके महापाप भी नष्ट हो जाते हैं, जो नित्य दो समय पाठ करता है,
वह धन से तथा धान्य से परिपूर्ण हो जाता है।

श्लोक ११

जो व्यक्ति नित्य तीनों समय [प्रातः, मध्याह्न तथा सन्ध्या] इसका पाठ करता है,
उसके महाशत्रुओं का नाश हो जाता है, उस पर महालक्ष्मी जी सदा प्रसन्न रहती हैं
तथा अनेक शुभ वरदान प्रदान करती हैं।

॥ सद्गुरुनाथ महाराज की जय॥

भाषान्तर © २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।